International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 6, Nov-Dec, 2022, Impact Factor: 7.326

रामचरित मानस मेंवर्णित जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता

कृष्णा

शोधार्थी, श्याम विश्विद्यालय, दौसा

सारांश :–

काव्य गगन के सूर्य गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृति और जनमानस के महाकवि काव्यस्रष्टा और जीवनदृष्टा रहे हैं। इनके द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस हिन्दी साहित्य में अपना अद्वितीय स्थानतोरखती है, साथ ही हिन्दू धर्म ग्रन्थ के रूप में भी स्थापित है। रामचरितमानस के माध्यम से जिन मानवीय मूल्य, पारिवारिक मूल्य एवं जीवन मूल्यों का अद्‌भुत समन्वय तुलसी ने राम एवं अन्य पात्रों के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किये हैं वो आज भी हमारा पथ प्रदर्शन कर रहे हैं और करते रहेंगे, क्योंकि वर्तमान भौतिकवादी युग में मनुष्य केवल अपना ही स्वार्थ चाहता है उसकी नजर में घर, परिवार, समाज, राष्ट्र व रिश्तों का कोई महत्व नहीं है वह स्वार्थ के वशीभूत होकर मानवीय मूल्यों और नैतिक आदर्शों से दूर हो चुका है और अर्थ प्राप्ति की दौड़ में सबसे आगे निकलना चाहता है। चमत्कारिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के होते हुए भी वास्तविक शान्ति व प्रसन्नता से वह कोसों दूर है। ऐसे में मानस में निहित मूल्यों को अपनाने से व्यक्ति का नैतिक व चारित्रिक विकास तो होगा ही वह कर्तव्य प्रधान एवं आस्थावान बनेगा और संस्कृति विहीनता व अमानवीयता की स्थिति से अपने को बचा सकेगा।

मूल शब्द :–संस्कृति विहीनता,काव्यस्रष्टा, जीवनद्रष्टा, अनुसंधान, क्षणभंगुरता, मोहाकर्षण, कर्तव्यनिष्ठा, सद्‌ग्राहिता, मणिकांचन, शाश्वत्,संकीर्णता, आत्मसंयम, मूल्य, गौरवान्वित, पुरूषार्थ, भग्नाशा।

प्रस्तावना :–

रामचरितमानस एक ग्रन्थ ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जीवन का आधार–स्तम्भ है, शाश्वत् जीवन मूल्यों का आकाशदीप है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना करके एक आदर्श समाज एवं आदर्श धर्म की प्रतिष्ठा की है और पात्रों के आदर्श चित्रण द्वारा लोकमंगल एवं लोकहित की शिक्षा देते हुए सम्पूर्ण विश्व के मानवों के सम्मुख आदर्श जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत की है। सम्पूर्ण रामचरितमानस असत् प्रवृत्तियों के दमन और सत् प्रवृत्तियों की विजय का काव्य है। आज हम मानवीय मूल्यों में आस्था खोते जा रहे हैं और चारित्रिक और नैतिक पतन की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं जबकि हमें आज एक सुखी और शान्त जीवन जीने की आवश्यकता है जिसके लिए हमें हमारे प्राचीन मूल्यों को जीवन में उतारना होगा और समाज में फैली बुराईयों को मिटाना होगा। मानस में निहित मूल्यों को अपनाकर व्यक्ति अपना नैतिक और चारित्रिक विकास तो करेगा ही साथ ही उसमें निर्णय क्षमता का विकास हागा क्योंकि मूल्य ही जीवन का आधार हैं, आवश्यकता है, यही सार्वभौमिक एवं शाश्वत् है। समाज का कल्याण, अभिउदय एवं विकास है।

अध्ययन क्षेत्र :–

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने अमर अमर आलोक से हिन्दी साहित्य को देदीप्यमान किया। वे मात्र एकान्त सेवी महात्मा ही नहीं थे, वरन् हिन्दी के सर्वाधिक युगजयी और क्रान्तिदर्शी कवि भी थे। इनका व्यक्तित्व अनेक विरोधाभासों का समुच्चय रहा है। बाल्यावस्था में ही जननी–जनक परलोक सिधारे। आर्थिक विपन्नता के कारण इन्हें दर–दर भटकना पड़ा तो लक्ष्मी ने इनकी चरण वंदना भी की। समाज ने इनको अपमानित भी किया और सम्मान भी दिया। ये रति–रंग में आकण्ठ मग्न भी हुए और परम वियोगी संत भी। एक ऐसे संत जिसने भौतिक वैभव की क्षणभंगुरता को पहचान लिया हो तथा आत्म साक्षात्कार के उस

सोपान पर पहुँ गया हो जहाँ मोहाकर्षण निरर्थक हो जाते हैं। चित्रकूट, अयोध्या, काशी इनके प्रिय निवास स्थल रहे। काशी के लोगों ने इन्हें सर्वाधिक पीड़ित किया परन्तु विषपायी होकर वे विश्व मानवता को रामचरितमानस के माध्यम से राम नाम का पीयूष आजीवन पिलाते रहे हैं। राामचरितमानस वर्गविहीन समाज, समस्त प्रकार के शोषण, अन्याय, अत्याचार और अनाचार जैसी विसंगतियों से मुक्त समाज की स्थापना पर बल देती है साथ ही आदर्श लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बालकों को आत्मसंयमी, विनयशील, समाजसेवी, कर्तव्यनिष्ठ, आदर्श नागरिक बनने का संदेश देती है। इसके प्रत्येक पद, प्रत्येक चौपाई में मानवीय मूल्यों व गुणों का सार समाहित है। भगवान विष्णु के अवतार मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम एक आदर्श मानव का अद्वितीय उदाहरण है। मानस में साहित्य, समाज, ज्ञान, भक्ति, जीवन मूल्यों, आदर्श नैतिक मूल्यों, पारिवारिक मूल्यों का समन्वय करते हुए तुलसीदासजी ने व्यक्ति, परिवार, समाज का मार्गदर्शन किया हैं। इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनको बुद्ध के बाद सबसे बड़ा लोकनायक सिद्ध करते हुए कहा है कि – ''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके।..... तुलसीदास महात्मा बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक थे।''

सभ्यता व संस्कृति में रामचरितमानस का अपना एक अलग और उच्चतम स्थान हैं श्रीराम देश के जनमानस का आदर्श है। दशरथ पुत्र राम ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवीय मूल्यों व आदर्शों को स्थापित करने में समर्पित कर दिया। उनका जीवन आज भी जनमानस को प्रेरित करता है। मानस में तुलसी ने श्रीराम के सम्पूर्ण जीवन चरित्र के माध्यम से मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया है। इसमें व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्वस्तर पर मानव मूल्यों की महत्ता का वर्णन श्रीराम के द्वारा किया गया है, जो आज भी हमारे लिए उतने ही प्रासांगिक हैं क्योंकि मानवीय मूल्यों के अभाव में जीवन में सफलता प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। धीरज, साहस, प्रेम, करूणा, दया, अहिंसा एवं सत्य जैसे मानवीय मूल्य हमारे जीवन को सार्थक बनाते हैं। मानवीय मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाऐं व लक्ष्य हैं जिन्हें कोई भी मनुष्य समाज में रहकर सीखता है। ये मूल्य विभिन्न संस्कृतियों, विशिष्ट व्यक्तियों तथा परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। ये व्यक्ति को निर्देशित करते हुए उसके व्यवहार को परिष्कृत और परिमार्जित करते हैं, इन्हें सिखाया नहीं जाता, आत्मसात् किया जाता है। लेकिन आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं, जो भारत त्याग, तप, प्रेम, सद्भाव आदि सद्वृत्तियों का परिचायक था वहीं अब दुष्प्रवृत्तियों से ग्रसित होता जा रहा है। हमने विकास तो किया पर आदशों व मूल्यों को विस्मृत करके। अतः आज धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक विषय की खाईयों को पाटने के लिए आमूल–चूल परिवर्तन करना हमारा नैतिक दायित्व है।

साहित्यकारों द्वारा श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं का निर्माण किया गया है और कला तथा शिक्षा के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की गई हैं। यह सफलता पाकर हम फूले नहीं समा रहे। हम समझते हैं कि हमने बहुत कुछ पा लिया, हम बहुत आगे निकल गये पता नहीं हमने क्या कर लिया लेकिन सही मायने में देखें तो कुछ भी प्राप्त नहीं किया। हमारी स्थिति दयनीय है क्योंकि यह सब प्राप्त करके भी हम अपने शाश्वत् मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। हम इन मूल्यों में से आस्था खोते जा रहे हैं, नैतिक और चारित्रिक पतन की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। हमारे में आत्मानुशासन की कमी, एकाग्रता का अभाव, संकीर्णता की भावना घर करती जा रही है, हमारा चारित्रिक स्तर गिरता जा रहा है।

मूल्यों में समय के अनुसार अन्तर आ रहा है जो मूल्य प्राचीन समय में थे वे आज नहीं रहे, पश्चिम के भौतिकवादी मूल्यों का भारत के आध्यात्मिक मूल्यों पर गहरा असर हुआ है, हमारी शिक्षा में भी मूल्यों को लेकर कुछ नकारात्मकता सामने आ रही है। आज के बालक ही भावी समाज के निर्माता हैं अतः बालकों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे उनमें मूल्यों का विकास हो सके। शाश्वत् मूल्यों का संरक्षण हो सके। सुखी और शांत जीवन जी सके, और इन सबके लिए हमें हमारे प्राचीन मूल्यों को अपनाना होगा, उन्हें अपने जीवन में उतारना होगा क्योंकि चारित्रिक उच्चता के बिना मानव समाज की सभ्यता और संस्कृति उच्च नहीं बन सकती। शिक्षा में हमें मूल्यों को स्थान देना होगा। अराजकता, सामाजिक वैषम्य, धार्मिक कट्टरता जैसी अनेक बुराइयाँ समाज में पनप रही हैं, ऐसे में तुलसीदास जी की रामचरितमानस में निहित मूल्यों को अपनाने से उनकी मन स्थिति सुधार होगा, सामाजिक और पारिवारिक तथा नैतिक और चारित्रिक विकास होगा। व्यक्ति अपनी निर्णय क्षमता का विकास कर सकेगा और जीवन को अनुशासित एवं उन्नत बनाने की ओर भी प्रयासरत रह पायेगा।

रामचरितमानस में श्रीराम के सम्पूर्ण जीवन चरित्र के माध्यम से मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया हैं। राम एक आदर्श मानव, आदर्श मित्र, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श शिष्य, आदर्श पिता, आदर्श राजा व आदर्श साधक के रूप में तुलसी ने राम के गुणों का जो वर्णन किया है वह प्रत्येक दृष्टि से मानवीय मूल्यों का आधार है। मानस में श्रीराम सत्य के अनुचर और सत्य के प्रतीक हैं, अयोध्याकाण्ड़ में इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए कहते हैं –

नहि असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा।।
सत्य मूल सब सुकृत सुहाए। वेद पुरान विदित मनु गाये।।[2]

मानव के विभिन्न व्यवहारों, सम्बन्धों, भारों और मर्यादाओं में मूल्यों का सर्वोत्तम स्थान है। मैत्री निभाने के लिए सत्यता का मूल्य आवश्यक है। राम ने सुग्रीव, हनुमान, विभीषण, अंगद आदि के साथ इस मित्रता का निर्वाह किया। आदर्श पुत्र रूपी मूल्य का जैसा वर्णन मानस में किया गया है वैसा किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं किया गया। राम ने माता–पिता की आज्ञा का निर्वाह करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। भ्रातृमूल्यों का निर्वाह मानस में राम को लेकर ही नहीं अपितु भरत, लक्ष्मण, शत्रुध्न और अन्यों के व्यवहारों से मिलता है। एक अच्छे सेवक के कर्तव्य निर्धारित करते मानस में तुलसी ने कहलाया है –

''सेवक कर पद नयन से, मुख सो साहिबु होय।''[3]

मूल्यों की स्थापना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरूषार्थों के साथ होती है, श्रीराम ही नहीं अपितु रामचरितमानस का प्रत्येक पात्र आदर्श जीवन मूल्यों का उदाहरण है। राम वनवास की बात सुनकर कौशल्या व्याकुल हो जाती है परन्तु त्याग, सत्य, वचन पालन जैसे मानवीय मूल्यों के कारण ही वह न तो राम को रोक पाती है और न ही वन में जाने की बोल सकती है। मानस में सीता का आदर्श भारतीय नारी का स्वरूप दर्शाया है, सीता वन के कष्टों की उपेक्षा कर पत्नी धर्म का पालन करते हुए पति के साथ चलने की विनती करती है।

वर्तमान में मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस अति प्रासंगिक है। श्रीराम का जीवन आदर्श मनुष्य जीवन को ऊँचाईयों पर पहुँचाता है। उनकी नैतिकता मूल्यों को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। भगवान राम के लिए चाहे वह निषादराज हो या भीलनी शबरी हो सभी समान हैं, वे सभी को प्रेमपूर्वक गले लगाते हैं, इसी का वर्णन करते हुए तुलसी कहते हैं –

प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि ते दण्ड़ प्रनामु।
रामसखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुटत सनेह समेटा।।[4]

विविधता मेंएकता का मूल्य भी तुलसी ने मानस में स्थापित किया है। राजा दशरथ की तीन रानियाँ, चार पुत्रों तथा राम के साथ वानर सेना, हनुमान सेना आदि सभी का चरित्र अलग होते हुए भी उनमें एकता थी। मानस हमें अच्छी संगति की सीख भी प्रदान करती है। कैकयी राम से अत्यधिक प्रेम करती है परन्तु दासी मंथरा की संगत में आकर प्रिय पुत्र के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँग लेती है, यह प्रसंग भी हमें सिखाता है कि हमें अच्छी संगति में रहना चाहिए ताकि नकारात्मक भाव हम पर हावी न हो सके।

निष्कर्ष :–

आज के प्रतिस्पर्धी युग में राम किस प्रकार प्रेरणा स्रोत बन सकते है,, यह सर्वविदित तथ्य है। आज मानव अमर्यादित, उच्छृंखल, स्वतंत्र एवं आत्मकेन्द्रित हो गया है, मूल्यों का क्षरण प्रति–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और अधैर्य स्वार्थपरता एवं प्रतिस्पर्धा आदि ने पैर जमाने शुरू कर दिये हैं, ऐसी परिस्थिति में राम को एक युग पुरूष के रूप में तुलसीदास जी ने युगदृष्टा बनाकर युग सापेक्ष रामचरितमानस को सौंपा जो जीवन जीने का अचूक मंत्र है जो व्यक्ति को तोड़ता नहीं अपितु जोड़ता है। तुलसी बालकाण्ड़ में मानस की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं–

रामचरितमानस इहि नामा, सुनत श्रवण पाइय विश्रामा
मनकर विषय अनल बर जहई, होई सुखी जो इहि सर बहई।।
(रामचरितमानस, बालकाण्ड़)

'रामचरितमानस' यह वह ग्रन्थ है जो हमें अस्वीकार से स्वीकार, अनास्था से आस्था, मिथ्या विश्वासों से सत्य प्रतीतियों और विघटन से संगठन की ओर ले जाता है। गोस्वामी तुलसीदास के हृदय से निकला यह रत्न हमारे जीवन को नयी दिशा प्रदान करता है। मानस तत्कालीन युग का दर्पण भी है और आधुनिक युग का दीपक भी। यह मानव मूल्यों का काव्य है, संस्कृति की पालना है और हमारे जीवन को स्वस्थ दिशा प्रदान करने वाला ग्रन्थ है। बड़ों के प्रति सम्मान, बराबर वालों के प्रति स्नेह और बंधु बांधवों के प्रति भाईचारे की भावना का जो रूप मानस में आया है उसकी हमें आवश्यकता है। मानस में निहित जीवन मूल्यों को आत्मसात् करने से दृष्टिकोण बदलता है, वर्तमान तनावग्रसित जीवन को एक नया स्वरूप एवं आधार मिलता है। इसमें मानव जीवन को सुखी व उन्नत बनाने वाले सिद्धान्तों का समावेश है। मानव में अभिव्यक्त निःस्वार्थ भावना और भ्रातृत्व भावना हमारा दिशा–निर्देश कर सकती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उन्हें भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि स्वीकारते हुए कहा है –''अपने दृष्टि विस्तार के कारण ही तुलसीदास जी उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मन्दिर में पूर्ण प्रेम प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं। भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी कवि को कह सकते हैं तो इन्हीं महानुभाव को।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका –आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, संस्करण–2010, पृ. स. 98
2. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड़, पृ.स. 49
3. दोहावली, 523
4. रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड़, 243/3
5. रामचरितमानस, बालकाण्ड़– पृ.स. 67
6. हिन्दी साहित्य का विकास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मलिक एण्ड़ कम्पनी प्रकाशन, संस्करण–2009, पृ.स. 113

वेबसाइट्स –

7. www2.warwick.ac.uk/ ..... / progsandmods/modules/ramcharitmanas
8. national journal of research & innovative prachices 9NJRP), Vol- s, Issue – 8 - 2022

मैग्जीनएवं जर्नल

9. साहित्य अमृत, प्रभात प्रकाशन, सितम्बर 2016
10. अपनी माटी : साहित्यिक ई–पत्रिका apnimaati.com@gmail.com